❀ भजन नं० ५

दोहा:–एक शब्द गुरुदेव का, जा का अनन्त विचार ॥
पण्डित थाके मुनि जना, वेद न पावें पार ॥

सुनो भाई साधो ! अक्षर पद का विचार ॥टेक॥

नित्य शुद्ध, शिवरूप, निरंजन, निर्विकल्प, निश्चय भव भंजन ।
अजर, अमर, अज, निर्गुण, निर्मल निर्विशेष निराधार ॥१॥
विभु, अनन्त अद्वैत अविनाशी, पुरुषोत्तम, स्वतन्त्र सुखराशी ।
स्वयं प्रकाश असंग अनादि, निष्क्रिय और निराकार ॥२॥
पूर्ण ब्रह्म अनन्त अनूपा, अप्रमेय अव्यक्त अरूपा ।
निर्विकार निरवयव सनातन अगम अखण्ड अपार ॥३॥

* भजन नं० ६

दोहा– ध्वजा फड़के शून्य में बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में पहुँचेगा कोई शूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर, सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥
श्याम पुतलिया बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न–भिन्न आसन मारे ॥
जिसमें थाना सहस्र कमल का तीन लोक यहाँ विस्तारे ।
जनिता सविता देव सबन के इष्म रूप सातों धारे ॥
चूँ चूँ चैकुला झाल समद की घण्टा शंख बजें न्यारे ।
धूम निहार गगन में धँस चल ज्योति जले नौ लख तारे ॥

❀ इस पद में अक्षर–ब्रह्म का स्वरूप बतलाया गया है ।

पांच कमल के बीच कुण्डलिनी सहज सहज ही फुङ्कारे ।
मेरू दण्ड से सीधा होकर, तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना यहां पर, भई सुरति यहां दीवानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥१॥

दर्शन यहां त्रिलोकपति के पाओ मन में हर्षाओ ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जाओ ॥
तिरछा मार्ग बंक नाल का विन सद्गुरु कुछ नहीं पाओ ।
ऊँचा नीचा ऊँचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जाओ ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमिट बीच सुख मन आओ ।
पीपी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छिप जाओ ॥
और मरें सब जग का मरना तुम जीते जी मर जाओ ।
भृङ्गी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरु के चित लाओ ॥
तन मन सौंपो अपना उन को हो जाओ सर्वस्व दानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥२॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा ।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा ॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत, ओं ओं हू हू वाजा ।
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा ॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां मदन देख कर ही लाजा ।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह बाल टूटा तागा ॥
गंगा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा ।
अमृत रस में न्हा कर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा ॥
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मगनानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥३॥

द्वादश गुण प्रकाश यहां पर त्रिकुटि से शून्य में आई ।
रूपवन्त देवों से मिल कर, सिन्धु सरोवर जा न्हाई ॥
यहां शून्य की छवी को कोई, कहो सके कैसे गाई ।
मान सरोवर अमृतधारा, आनन्द की नदियाँ पाई ॥
सारंगी सितार बाजे हैं श्रुति शब्द में ठहराई ।
वसु, मरुत वहां वास करे हैं कहा कहुँ सुन्दरताई ॥
अग्नि, चन्द्र समान मुखों से मन्द मन्द ही मुस्काई ।
आयु षोड़श वर्ष सवन की ऐसी ही अवला पाई ॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहां अमृत रस बरसे पानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥४॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी ।
बाग बगीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी ॥
अमी सरोवर बाग-बाग में तट उनका पारस की मनी ।
कैसे शोभा कहुँ यहां की सब कुछ जाने आप धनी ॥
स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरति फिर आगे को चली ।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गई प्रेम गली ॥
दसों दिशा में घोर अन्धेरा मगन भई नहीं छली बली ।
योजन खरब गई नीचे को यहां से देखी सैर भली ।
इस पद में दस नील अन्धेरा यहां से सुरति उलटानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥५॥
योजन खरब गई नीचे को, थाह वहां की नहीं पाई ॥
धर सद्गुरु का ध्यान सुरतिया, उलट गगन पर चढ़ आई ।
महा शून्य से आगे आकर, सिताऽसिता नदियां बाई ॥
मण्डल चारि पुरुष दर देखा, भंवर गुफा झूली जाई ।

एक हिंडोला यहां पर अद्भुत झूल रहे मुनि वर राई ॥
इड़ा पिंगला रज्जु करके सुखमन की पटरी लाई ।
कुण्डली का लंगर जब खींचा, पींग गगन झोका खाई ॥
परा पश्यन्ति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ।
अनहद घोर घटा बिनु बर्षे, बन्शी मधुरी मनमानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥६॥
गोपी मधुरी वाणी गावें बन्शी बजावें नन्द कुमार ।
एक-एक गोपी संग मिल कर सोऽहं सोऽहं रहे उचार ॥
हीयरा से होयरा मिल भेटे आनन्द का को करे सुमार ।
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव लई मन में धार ॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गल बैया डार ।
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार ॥
गंगा यमुना अचल हो गई ऐसा अद्भुत किया विहार ।
रुद्र, साध्य, मुनि एक हो गये ताड़ी लागी अगम अपार ॥
नाका टूटा सत्य लोक का उड़ गये हंसा सेलानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥७॥
ज्योति हंस यहां बास करे हैं सूक्ष्म चैतन्य ही दर्शाया ।
जड़ स्थूल नहीं हैं यहां पर नहीं यहाँ काया माया ॥
प्रेम दिवानी हुई यहां पर सत्य-सत्य आपा पाया ।
हक्क हक्क ध्वनि सुन के बीन की फिर आपे में मगनाया ॥
रूप स्वरूपा नदियां यहां पर सोना रूपा जल छाया ।
बन उपवन हैं यहां पर अद्भुत कोटि चार इनकी छाया ॥
कोटिन सूरज चांद समाना, पहुप वृक्ष पर लगि आया ।
परम हंस यहां बास करें हैं एक भुशुण्डि काग पाया ॥

रस बस के सीकारे यहां पर हंस करें मधुरी बानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥८॥
सत्य पुरुष का दर्शन किया क्या बरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूरज चांद देख लो एक रोम से शर्माई॥
पद्म त्रिलोक बराबर उनकी बिछी सेज सुख की पाई।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई॥
सन्त कहें अब अलख लोक की महिमा और उत्तमताई।
अरबन खरबन ज्योति चमके कोटि शंख जो मलुकाई॥
अगम लोक की गम नहीं मुझ को गूँगे ने मिसरी खाई।
परमानन्द गुरु चरणों पर कोटि-कोटि ही बलि जाई॥
गुरु मिला आपा जब मेटा *श्रुति शब्द में मगनानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥६॥

मजन नं० ७

गई रजनी हुआ सवेरा उठ कर जप लो तुम ओंकार ॥टेक॥
ब्रह्म मुहूर्त में उठ गाओ, गुण ईश्वर का ध्यान लगाओ।
परमानन्द मगन हो जाओ, शोभन समय विचार।
आया दिन गया अन्धेरा ॥१॥
पूर्व दिशा अब अरुण भई है, प्रकृति देवी पट बदल रही है।
धर्म ने तम की बांह गही है जागे सब नरनार।
हिये में हरि को हेरा ॥ २ ॥
प्रमुदित नलिनी विहंस खिली है, प्रिय समीरसे सुरभि मिली है।
अति शोभामय बनस्थली है, अलिगण करें गुञ्जार।
लसें आम आंवरे केरा ॥३॥

इस पद में साधन तथा अनुभव के बाद श्रुति शब्द का रहस्य प्रकट किया है।